गिरधारीलाल घासीराम शोधपीठ
द्वारा भारत-नेपाल से प्रसारित

ISSN : 2348-5639
Impact Factor : 5-843

SHODH SAMALOCHAN

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

Vol. : 11, Issue : 3(1)

June : 2024 (Spl. Issue)

सामासिक संस्कृति के संवाहक : हिन्दी भाषा और साहित्य

Special Issue Editor :
Dr. Ram Pravesh Rajak

Editor :
Dr. Naresh Sihag 'Bohal'
Advocate

Executive Editor :
Dr. Varsha Rani

23.	रीतिकालीन संत कवियों के काव्य में समाज और संस्कृति	डॉ. शेख. बेनजीर, डॉ. एस. शम्स अख्तर	117–120
24.	भारतीय संस्कृति और वसुधैव कुटुंबकम्	डॉ. श्वेता रस्तोगी	121–125
25.	सामासिक संस्कृति की दृष्टि से प्रेमचंद की कहानियों का मुल्यांकन	डॉ. निर्मल सुवासिया	126–133
26.	संस्कृति, मनुष्य और समाज अंतःसंबंध	मिथुन नोनिया	134–137
27.	लोकतंत्र-सामासिक संस्कृति और आधुनिक युग में हिंदी भाषा तथा साहित्य	रंजिनी के.एस.	138–143
28.	संस्कृति : अर्थ और स्वरूप	रतिराम गढ़ेवाल	144–148
29.	संस्कृति : अवधारणाओं का वैविध्य	रीमा रेणु कन्डुलना	149–154
30.	संस्कृति और साहित्य : अंतःसंबंध का समाजशास्त्र	डॉ. रीना सिंह	155–157
31.	भारतीय सांस्कृतिक वैविध्य की संवाहक हिंदी	डॉ. मणिकण्ठन. सी.सी	158–161
32.	दिवाकर जी की कहानियों में लोक-संस्कृति	चन्दन कुमार	162–167
33.	निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में सामासिक संस्कृति	माधुरी कुमारी	168–171
34.	समकालीन मलयालम और हिन्दी कविता का सामासिक लोक पक्ष : एक अध्ययन	डॉ. महेश. एस	172–177
35.	सामासिक संस्कृति के विकास में हिन्दी साहित्य की भूमिका : सीमाएं और संभावनाएं	डॉ. सुलताना प्रवीन	178-182
36.	समाज, संस्कृति और साहित्य का पारस्परिक संबंध	डॉ. सुनीता सिंह	183–189
37.	संस्कृति : अर्थ और स्वरूप	Dr. Sharmila Biswas	190-192
38.	सामासिक संस्कृति और हिंदी कविता	परमजीत कुमार पंडित	193–200
39.	महावीर प्रसाद द्विवेदी और भारतीय संस्कृति	पूजा गुप्ता	201–206
40.	'भारतीय सामासिक संस्कृति के वाहक : तूती-ए-हिंद'	नेहा जायसवाल	207–210
41.	हिंदुस्तानी रंग के कवि रहीम	प्रो० वशिष्ठ 'अनूप'	211–216
42.	रीतिकालीन साहित्य में सामासिक संस्कृति और महामति प्राणनाथ	डॉ० कमल कुमार	217–221
43.	सामासिक सांस्कृतिक तत्व की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति (अखिल भारतीय भक्ति साहित्य के संदर्भ में)	डॉ० शशि कुमार शर्मा	222–227
44.	हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता और संस्कृति	डॉ. सिद्धेश्वर काश्यप	228–232
45.	असमिया साहित्य-सांस्कृतिक के उदगाता ज्योति प्रसाद अगरवाला	मंजूरी डेका	233–238

गिरधारीलाल घासीराम शोध पीठ द्वारा भारत, नेपाल से प्रकाशित ISSN : 2348-5639
SHODH SAMALOCHAN
AN INTERNATIONAL PEER-REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTTERLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

महावीर प्रसाद द्विवेदी और भारतीय संस्कृति

पूजा गुप्ता
शोधार्थी, कलकत्ता विश्वविद्यालय।

महावीर प्रसाद द्विवेदी का संपूर्ण रचना संसार भारतीय संस्कृति की नींव पर पल्लवित हुआ। उनके साहित्य में राष्ट्रीय जागरण हो हिंदी परिमार्जन कार्य या हिंदी जातीय चेतना, भारतीय ज्ञान–दर्शन हो, वैज्ञानिक चेतना, प्राचीन शास्त्रीय साहित्य–कला अथवा लोक संस्कृति का वर्णन– ये सभी उन्होंने भारतीय संस्कृति के आलोक में ही देखा। द्विवेदी साहित्य के अध्ययन से भारतीय संस्कृति, कला, साहित्य, स्थापत्य तथा भारतीय भाषाओं की जड़ों तक जाने का अवसर मिलता है साथ ही, यह भी ज्ञात होता है कि अपनी विस्तृत परंपरा में भारतीय संस्कृति ने समग्र रूप से देश को जोड़ कर रखा है। यह कहना गलत ना होगा कि महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिदी नवजागरण का विकास भारतीय संस्कृति के धरोहर पर किया।

भारत में सामंती व्यवस्था बहुत पुरानी है। दुनिया के सबसे प्राचीन सामंती देशों में से एक भारत है। आश्चर्य की बात यह है कि जितनी पुरानी सामंती व्यस्था की जड़ें हैं, उसका विरोध उतना ही पुराना है। रामविलास शर्मा ने भारत की विवेक परंपरा पर अपना मत रखते हुए लिखा है, "सामंती समाज–व्यवस्था को बदलना सबसे मुश्किल काम है, सामाजिक कुरीतियों को मिटाना बहुत कठिन है, धार्मिक अंधविश्वासों को निर्मूल करना दुष्कर है।"[1] आज भले देश में प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था लागू है, लेकिन सामंती सोच पर अब तक पूर्णतरू विजय प्राप्त नहीं किया जा सका है। रामविलास जी के शब्दों में, "प्रेमचंद ने 'कर्मभूमि' में लिखा था कि भारत में क्रांति नहीं, क्रांति के बाबा की बातें करो, समाज के नेता तुम्हें बोलने देंगे लेकिन जहां तुमने व्यवहार क्षेत्र मे पांव रखा, भारतीय समाज को सुधारने चले, वर्ण व्यवस्था में हाथ लगाया, ऊँच–नीच का भेद मिटाने की तरफ बढ़े, वहीं जोरों से विरोध शुरू हो जाएगा।"[2] जैसे–जैसे इस व्यवस्था के अंतर्विरोध बढ़ते गए, इन्हें चुनौति देने वाली विचारधारा भी क्रमशरू प्रखर होती गई।

एक ओर वेदांत की विचारधारा थी जो ब्रह्म को सर्वव्यापी बताकर सामाजिक विषमताओं को असत्य और भ्रम सिद्ध करती है। बीसवीं सदी में अनेक समाज–सुधारकों और साहित्यकारों पर इस वेदांती विचारधारा का असर देखा जा सकता है। दूसरी ओर वह परंपरा है जो संसार को सच मानती है, उसे सारहीन नहीं कहती पर देवी–देवताओं, स्वर्ग–नरक की कल्पनाओं को मिथ्या कहती थी और वर्णव्यवस्था एवं पुरोहित वर्ग की तीखी आलोचना करती थी। वृहस्पति और चार्वाक इन दो नामों से सम्बन्धित यह विचारधारा भारत की भौतिकवादी परंपरा के अंर्तगत आती है। 'सरस्वती' के संपादक बनने से पहले सितम्बर 1901 अंक की इस पत्रिका में महावीर प्रसाद द्विवेदी का एक लेख 'निरीश्वरवाद' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। तथापि द्विवेदी जी भौतिकवादी नहीं थे।